DR. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

DEFINITION OF PERSONALITY

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की परिभाषा अपने-अपने ढंग से देने का प्रयास किया हैं, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण और आवश्यक परिभाषाएँ हैं, जो इस प्रकार है-

वारेन ने व्यक्तित्व की परिभाषा इस प्रकार दी है- "व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है"। वारेन के द्वारा दिया गया यह परिभाषा पूर्व रूप से सत्य नहीं है। क्योंकि व्यक्तित्व की रचना ऐसे समूहों में, भागों में और संगठनों में नही होती जो कुछ मानसिक और कुछ

शारीरिक होते है। इसके विपरीत व्यक्तित्व की क्रिया बडी ही उलझी हुई है और वातावरण से घनिष्ट रूप से संबंधित है। यह परीभाषा मानसिक और शारीरिक संगठन को एक-दूसरे से अलग कर देती है।

डेशील महोदय ने जो व्यक्तित्व की परिभाषा दी है वह बहुत ही उपयुक्त लग रहा है। इनके अनुसार, व्यक्ति का व्यक्तित्व सम्पूर्ण रूप से उसकी प्रतिक्रियाऔं की और प्रतिक्रियाऔं की संभावनाऔं की उस ढंग से व्यवस्था है, जिस ढंग से वह समाज के साथी सदस्यों द्वारा प्रत्यक्षीकरण की जाती है। यह व्यक्ति के व्यवहारों का एक समायोजित संकलन है जो कि व्यक्ति के अपने समाजिक व्यवस्थापन में निहित होते है। इस प्रकार यह परिभाषा व्यक्तित्व की प्रतिक्रियाऔं और व्यवहारों का ढंग बतलाती है। साथ ही साथ इसमें व्यक्ति को ही महत्वपूर्ण नहीं समझा गया है, अन्य प्राणियों को भी सम्मिलित किया गया है। अतः इस परिभाषा को हम संगत कह

सकते है क्योंकि यह व्यक्तित्व पर पूर्व रूपेण प्रकाश डालती है।

आलपोर्ट ने भी इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि- "व्यक्तित्व एक व्यक्ति के उस मनोशारीरिक संस्थान का क्रियाशील संगठन है जो उसके अपने निजी व्यवस्थापन को निश्चित करता है"। इस परिभाषा में इस बात पर महत्व दिया गया है कि व्यक्तित्व का विकास उसक व्यवस्थापन क्रिया पर आधारित है।

इसी प्रकार यंग महोदय व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए कहा है कि-"हम व्यक्तित्व को एक व्यक्ति की अधिक या कम आदतों, गुणों, अभिवृत्तियों और विचारों के समग्र रूप में परिभाषित कर सकते है जैसे कि बाह्य रूप से यह विशिष्ट एवं सामान्य भूमिकाओं एवं परिस्थितियों में संगठित रहते है तथा जैसे कि आन्तरिक रूप से आत्म-चेतना के तथा आत्म के प्रत्यय के तथा विचारों, मूल्यों एवं उद्देश्यों के चारों ओर सम्बंधित रहते है जो

कि प्रेरणाऔं, भूमिकाऔं एवं स्थितियों से सम्बंधित होते है”।

इस प्रकार से यह परिभाषा व्यक्ति के अहम को महत्व देती है और व्यक्ति के व्यवहार को भी महत्व देती है जिसपर दूसरों का प्रभाव परता है तथा जो उसको भी प्रभावित करता है।